

## वो मस्तानी रात....-2

लेखक : राज कार्तिक

मैंने उससे पूछा - तुम घर पर अकेली हो? बाकी घर के लोग कहाँ गए हुए हैं?

तो वो बोली - मेरे सास-ससुर एक रिश्तेदार की शादी में गए हुए हैं और मेरे पति आर्मी में हैं और वो अपनी ज्यूटी पर गए हुए हैं।"

"मतलब आज रात तुम अकेली हो?"

"हाँ..." उसने मुस्कुराते हुए जवाब दिया।

अब तो सारी ढील मेरी तरफ से थी उसने तो साफ़ रास्ता दे दिया था।

रात को सामन समेट कर मैंने और पवन ने सामान गाड़ी में रखा। वो अपने दरवाजे पर खड़ी हमें देख रही थी। पवन गाड़ी स्टार्ट करने लगा और मैं बगल में बैठ गया। पर गाड़ी में तो मैं पहले ही अपने हाथ चला चुका था तो भला कैसे स्टार्ट होती। पवन कोशिश करता रहा पर गाड़ी स्टार्ट तो होनी ही नहीं थी।

मैं गाड़ी से उतर गया और पवन को बोला - भई, गाड़ी तो खराब हो गई लगती है। लगता है आज यहीं रुकना पड़ेगा।

मैंने यह बात उस अप्सरा को सुनाते हुए कही थी। मेरी बात से उसके मुरझाते चेहरे पर फिर से मुस्कराहट चमक उठी।

मैं उसके पास गया और बोला - लगता है हमारी गाड़ी खराब हो गई है। क्या हम आज रात आपके घर पर रुक सकते हैं?

वो कुछ नहीं बोली और मुस्कुरा कर अंदर चली गई।

उस अप्सरा का नाम ममता था। यह हमें वहाँ रात को रुकने पर पता लगा।

तभी ममता की आवाज आई और उसने मुझे अंदर बुलाया, वो बोली - तुम दोनों खाना खा लो, फिर मैं तुम्हारे सोने का इंतजाम कर देती हूँ।

मैंने पवन को आवाज लगाई। पवन के आने के बाद हम दोनों ने खाना खाया। हल्की गर्मी के दिन थे तो पवन बोला - गाड़ी में सामान पड़ा है, मैं तो गाड़ी में ही सो जाऊँगा।

मैं तो खुद भी यही चाहता था।

ममता ने पवन को ओढ़ने के लिए कम्बल दिया और पवन उसे लेकर गाड़ी में सोने चला गया।

आप में से जो लोग गाँव से हैं उन्हें पता होगा कि गाँव की रात बहुत जल्दी शुरू हो जाती है।

फिर उसने मेरे लिए बाहर आँगन में बिस्तर लगा दिया। करीब एक घंटे के बाद वो हाथ में दूध का गिलास लेकर आई। उसने अब एक ढीला सा सलवार कमीज पहन रखा था। नीचे ब्रा जैसे कोई चीज़ नहीं थी। इसका एहसास उसकी हिलती हुई चूचियों से हो रहा था।

गिलास मुझे देकर वो मेरी चारपाई पर ही बैठ गई। फिर हम दोनों इधर उधर की बातें करने

लगे।

मैंने उससे उसके परिवार के बारे में पूछा और उसने मुझ से मेरो।

बातें करते करते उसके पति के बारे में बात होने लगी और फिर बात सेक्सी होती चली गई।

"तुम कैसे रहती हो अपने पति के बिना?"

"बस काटनी पड़ती है राज... नहीं तो अलग कौन रहना चाहता है!"

"तुम्हारा दिल नहीं करता?"

"दिल किस लिए???"

"सेक्स के लिए?"

वो थोड़ा शरमाई फिर धीरे से बोली, "दिल तो सबका ही करता है, मैं कोई अलग थोड़े ही हूँ।"

मैंने मौके का फायदा उठाते हुए अपना हाथ उसके हाथ पर रखा तो वो थोड़ा कांप सी गई।

पर उसने हाथ हटाया नहीं था। मैं उसका हाथ धीरे धीरे सहलाने लगा। वो गर्दन को झुकाए

मेरे थोड़ा सा और करीब आ गई। अब मेरे हिम्मत करने की बारी थी और मैंने हिम्मत करते

हुए अपने हाथ से उसकी टुंडी को ऊपर करते हुए उसकी आँखों में देखा तो उसने आँखें बंद की हुई थी।

मैंने उसका चेहरा पकड़ कर थोड़ा अपनी तरफ खींचा तो महसूस हुआ कि उसकी साँसें बहुत

तेज तेज चल रही थी। मैंने अपने होंठ उसके कांपते हुए होंठों पर रख दिए। होंठ छूते ही वो

एकदम से खड़ी हो कर अंदर भाग गई और उसने दरवाज़ा बंद कर लिया।

मैं उसके पीछे पीछे गया और उससे दरवाज़ा खोलने की गुज़ारिश की- प्लीज़ ममता... दरवाज़ा खोलो ना, मुझे मालूम है कि तुम्हें मेरी जरूरत है..

"नहीं राज... मैंने आज तक अपने पति को धोखा नहीं दिया है... मुझे अपने पत्नी धर्म से मत डगमगाने दो...!"

"प्लीज़ ममता..."

मैंने दरवाज़ा थोड़ा सा अंदर धकेला तो अंदर से कुण्डी नहीं लगी थी। मैं दरवाज़ा धकेल कर

अंदर चला गया। अंदर बिस्तर पर ममता बैठी थी। मैंने ममता के कंधों पर हाथ रखा और

उसको अपनी तरफ घुमाया। वो एकदम से मुझ से लिपट गई। मैंने एक बार फिर उसका चेहरा

ऊपर किया और अपने होंठ ममता के रसीले होंठों पर रख दिए।

इस बार ममता ने मुझे नहीं हटाया बल्कि वो चूमा-चाटी करने में मेरा पूरा साथ देने लगी।

मैंने अब उसको खड़ा कर लिया था। ममता उम्र में मुझे से बड़ी थी। होंठ चूसते चूसते मैंने

अपना एक हाथ ममता के बड़े खरबूजे के आकार की चूची पर रख दिया और सहलाने लगा।

ममता की चूची एकदम मक्खन के जैसे मुलायम थी। मैंने एक हाथ से ममता का कमीज ऊपर

उठाया और उसकी चूची को बाहर निकाला। चूचियों पर भूरे रंग का एक रूपये के सिक्के

जितना बड़ा एरोला और छोटे छोटे चुचूक ! ममता के चुचूक तन कर खड़े हो गए थे।

मैं उसकी चूची को मुँह में भर कर चूसने लगा। चूची पर होंठ लगते ही ममता की दबी हुई आग भड़क उठी और उसने मेरा सिर अपनी मुलायम मुलायम चूची पर दबा दिया। मैं अब ममता को ज्यादा देर तड़पाना नहीं चाहता था इसलिए मैंने अगले ही पल एक एक करके ममता के सारे कपड़े उतार दिए। उसने सलवार कमीज के नीचे कुछ भी नहीं पहना था।

सलवार उतार कर जब मैंने ममता की चूत पर हाथ रखा तो वो पूरी गीली और चिकनी थी। शायद ममता ने आज दिन में ही चूत साफ़ की थी।

"मुझे तो नंगा कर दिया ? अब अपने कपड़े भी तो उतारो !"

ममता के कहने के बाद मैंने बिना देर किये अपने सारे कपड़े उतार कर एक तरफ़ रख दिए। मेरा फनफनाता लण्ड अब ममता की आँखों के सामने था।

"अरे बाप रे... तुम्हारा तो बहुत बड़ा और मोटा है...?" ममता ने हैरान होते हुए कहा।

"क्यों फौजी का मेरे से छोटा है क्या ??"

"नहीं ... लण्ड तो फौजी का भी बहुत बड़ा है पर तुम से थोड़ा तो छोटा जरूर होगा। तुम्हारा तो बहुत डरावना लग रहा है।"

अब ममता थोड़ा खुलने लगी थी। मैं भी अब ममता के साथ बिस्तर पर लेट गया। ममता अपना सिर मेरे सीने पर रख कर मेरी छाती पर हाथ फेरने लगी और बोली - राज , आज जब तुम आये थे तो ना जाने क्यों तुम्हे देख कर मेरा दिल बेचैन हो रहा था। मुझे क्या पता था कि आज की रात मैं तुम्हारी बाहों में बिताऊँगी।

बातें बहुत हो चुकी थी और अब बारी कुछ करने की थी। मैंने ममता को बिस्तर पर सीधा लेटाया और उसके होंठों से शुरू करते हुए उसके बदन के एक एक हिस्से को चूमने लगा। पहले मैंने उसके होंठ चूमे फिर उसकी गर्दन और कंधों को चूमा। फिर मैंने ममता की दोनों चूचियों को बारी बारी से चूमा , फिर ममता की नाभि की चूमा।

मेरे चुम्बन से ममता गर्म हो रही थी और सीत्कारें भर रही थी। ममता की सिसकारियाँ कमरे में गूँजने लगी थी। मेरे होंठ लगातार नीचे की तरफ बढ़ते जा रहे थे। नाभि के बाद अगला नम्बर ममता की चिकनी जांघों का था। मैं जीभ से चाटते और चूमते हुए नीचे बढ़ रहा था। मैंने ममता की टांगों को थोड़ा फैलाया और अपने होंठ ममता के निचले होंठ यानी ममता की योनि पर रख दिए। चूत पर होंठों को महसूस करते ही ममता चिहूँक उठी और मेरे सिर को अपनी चूत पर दबा लिया जैसे मेरे सिर को ही अपनी चूत में घुसा लेना चाहती हो।

ममता की चूत बहुत पानी छोड़ रही थी। ममता ने दिन में ही अपनी चूत के बाल साफ़ किये थे। जिस कारण चूत एक दम नई नवेली कुंवारी लड़की की चूत जैसी दिख रही थी।

मैं मस्त होकर ममता की चूत चाटने लगा। बहुत रसीली चूत थी उसकी। वो भी अब मेरे लण्ड को पकड़ कर सहला रही थी और मस्ती के मारे लण्ड को पकड़ पकड़ कर खींच रही थी अपनी तरफ। मैंने घूम कर अपना लण्ड ममता के मुँह के पास कर दिया और उसने भी बिना देर किये

झट से मेरा लण्ड अपने होंठों में दबा लिया और लोलीपॉप की तरफ चूसने लगी। अब सीत्कार निकलने की बारी मेरी थी। ममता पूरी तरह से मस्त होकर लण्ड चूस रही थी और मैं भी उसकी चूत को चाट रहा था। मस्ती कुछ ज्यादा ही हावी हो गई और ममता मेरे मुँह पर ही झड़ गई। उसकी चूत से ढेर सारा अमृत निकल कर मेरे मुँह पर फैल गया। मैं उसका सारा पानी चाट गया।

तभी मेरे लण्ड में भी हलचल होने लगी। मैंने ममता को लण्ड छोड़ने को कहा -  
आह्हह ....ममता ... मेरा निकलने वाला है।

पर ममता ने लण्ड नहीं छोड़ा और मेरे लण्ड में ममता के मुँह में ही पिचकारी मार दी। ममता मेरे वीर्य का कतरा कतरा चाट गई। एक बूंद भी नीचे नहीं गिरने दी।

हम दोनों झड़ने के बाद थोड़ा ढीले पड़ गए और एक दूसरे की बांहों में लेट गए। कुछ देर बातें करने के बाद फिर से हम दोनों के जिस्म में गर्मी आने लगी थी। अब मैं ममता की चूचियों को चूस रहा था और ममता मेरे लण्ड को सहला रही थी जो कि अब फिर सर तान कर खड़ा हो चुका था। ममता एक बार फिर से नीचे हुई और लण्ड को चूसने लगी। मैंने भी ममता की चूत को अपने थूक से गीला किया और दो उंगलियाँ उसकी चूत में डाल दी और अंदर-बाहर करने लगा।

कुछ देर के बाद ममता बोली - राज, जल्दी से कुछ कर... अब और बर्दाश्त नहीं होता।

मैं भी अब और ज्यादा देर नहीं करना चाहता था। मैंने ममता की केले के तने जैसी चिकनी चिकनी टाँगें अपने कंधे पर रख कर लण्ड को ममता की चूत पर टिकाया और एक जोरदार धक्का लगा दिया। ममता की चीख निकल गई। चूत बहुत कसी थी, लण्ड मुश्किल से एक दो इंच ही घुस पाया था। मैंने बिस्तर के सिरहाने रखी तेल की बोतल से थोड़ा सा तेल लण्ड और चूत के संगम पर टपकाया और एक और धक्का ममता की टाँगें कस कर पकड़ते हुए लगा दिया। लण्ड आधा ममता की चूत में घुस गया था। ममता के चेहरे पर दर्द की लकीरें नजर आने लगी थी। पर मैं तो इतनी मस्त और कसी चूत पाकर फूला नहीं समा रहा था। मैंने दो तीन धक्के और लगाए और पूरा लण्ड ममता की चूत में पिरो दिया।

जैसे ही मेरा पूरा लण्ड ममता की चूत में घुस कर ममता की बच्चेदानी से टकराया, ममता ने मुझे कस कर अपने से लिपटा लिया। ममता दर्द और मस्ती के संगम में गोते लगा रही थी। मैं कुछ देर के लिए रुका और ममता के होंठ चूमने लगा और ममता की चूचियों को सहलाने और मसलने लगा। कुछ ही देर में ममता का दर्द कुछ कम हुआ और वो अपनी गांड उचकाने लगी। सिग्नल मिलते ही मैंने भी पहले हल्के-हल्के और फिर तेज तेज धक्के लगाने शुरू कर दिए।

ममता की सीत्कारों रात के सन्नाटे में मादकता की महक घोल रही थी। आह्हह उम्मम्म आह्हह ओह्हह आह्हह बस कमरे में ऐसी ही आवाजें गूँज रही थी। कमरे में चारों तरफ मस्ती

का आलम था। मैं पूरे जोश के साथ ममता की चूत को अपने लण्ड से रगड़ रगड़ कर चोद रहा था और वो भी गाण्ड उछाल उछाल कर लण्ड को अंदर ले रही थी। उसकी चूत मेरे लण्ड को अंदर जकड़ रही थी। चुदाई बहुत लम्बी चली और बहुत देर के बाद ममता का शरीर एक बार अकड़ा और ममता के चूत के रस ने मेरे टट्टे भिगो दिए। अब मैं भी अपने आप को ज्यादा देर नहीं रोक सका और पाँच मिनट के बाद ही मेरा लण्ड भी अपने वीर्य की पिचकारियाँ ममता की चूत में छोड़ने लगा और ममता की चूत पूरी भर दी। वीर्य के गर्म एहसास से ममता एक बार फिर से झड़ गई और लण्ड और चूत के रस से सराबोर फच्च फच्च की आवाज कमरे की मादकता को बढ़ाने लगी।

झड़ने के बाद हम दोनों सुस्त होकर लेट गए।

ममता बोली - राज, जानते हो मैंने शादी के बाद पहली बार अपने पति के साथ धोखा किया है... पर मुझे अफ़सोस नहीं क्योंकि मैंने अपनी जवानी एक तगड़े मर्द के हाथों में दी है... तुम मुझे सारी उम्र याद रहोगे।

मैंने भी ममता को अपनी बाहों में भर लिया और उसके होंठों पर होंठ रख दिए।

कुछ ही देर के बाद मेरा शेर फिर से दहाड़ने लगा और ममता का और मेरा एक बार फिर संगम हो गया। उस रात हम दोनों सुबह तक नहीं सोये और सारी रात चुदाई का आनंद लिया। वो मस्तानी रात मुझे आज तक नहीं भूली। पर मुझे इस बात का भी बहुत अफ़सोस है कि मैं ममता को दुबारा कभी नहीं मिल पाया। ऐसा नहीं है कि मैं दुबारा उसको मिलने नहीं गया पर जब भी मैं गया वो अकेली नहीं मिली। आज ममता दो बच्चों की माँ है और खुश है। अब तो मैं भी उसकी खुशहाल जिंदगी में दखल नहीं देना चाहता।

यह कहानी कैसी लगी, जरूर बताना, मुझे आपके मेल का इन्तजार रहेगा।

आपका अपना राज

Sharmarajesh96@gmail.com